

भाग
1

भारतीय भाषा साहित्य

(विविध संदर्भ)



संपादक
डॉ. राजेन्द्र यादव

ISBN : 978-93-81480-98-4

प्रकाशक : विजया बुक्स

1/10753 सुभाष पार्क, गली नं. 3

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

फोन : 011-22822514; 9910189445

Email : vijyabooks@gmail.com

rajeev02sharma@gmail.com

© : लेखक

प्रथम संस्करण : 2016

मूल्य : 650/-

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स,

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

विषय सूची

संपादकीय	5
1. स्त्री संदर्भ और भक्ति कालीन हिन्दी कविता प्रो. चन्दा बैन	11
2. भारतीय साहित्य की भूमिका डॉ. राजेन्द्र यादव	24
3. कफन कहानी को अंग्रेजी हिंदी पाठ : एक तुलनात्मक अध्ययन डॉ. विवेकानंद उपाध्याय	32
4. उत्तर राम प्रसंग : एक तुलनात्मक अध्ययन डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र	40
5. पराजित होते सम्बन्ध और हिन्दी उपन्यास डॉ. हिमांशु कुमार	54
6. समकालीन आदिवासी कविता डॉ. मनीष कुमार	59
✓ 7. दलित साहित्य में अस्मिता की अवधारणा डॉ. अरविन्द कुमार	71
8. शिक्षा में मूल्यांकन की अवधारणा डॉ. अरविन्द कुमार गौतम	82
9. छायावाद और जयशंकर प्रसाद का काव्य इन्द्रसिंह वरकड़े	95
10. हमारे समय में कबीर की प्रासंगिकता राजकुमार अहिरवार	102

दलित साहित्य में अस्मिता की अवधारणा

डॉ. अरविन्द कुमार

दलित साहित्य हिन्दी साहित्य की मुख्यधारा में चलने वाली साहित्य है। आज दलित साहित्य में अस्मिता की खोज की जा रही है। दलित साहित्य की अस्मिता दलित आत्मकथाओं में मुखर हुआ है। वह आत्मकथा चाहे वाल्मीकि की 'जूठन' हो या मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे' और अन्य आत्मकथा जैसे 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' - प्रो. श्यौराज सिंह वेचैन, तिरस्कृत, संतप्त- सूरज पाल चौहान, अक्कर माशी - शरण कुमार लिम्बाले, मर्दहिया, मणिकर्णिका - प्रो. तुलसीराम, 'मैं भंगी हूँ' - भगवानदास, झोपड़ी से राजभवन - माता प्रसाद, दोहरा अभिशाप - कौशल्या बैसन्ती, शिंकजे का दर्द - सुशीला खाक भौरे, घुटन- रमाशंकर आर्य, मेरा बचपन मेरा संघर्ष - नवेन्दु महर्षि, नागफनी - रूपनारायण सोनकर, उचक्का - लक्ष्मण गायकवाड़, अछूत - दयायवार, जीवन हमारा - बेबी काम्बले, छांग्या रुक्ख - बलवीर माधोपुरी आदि। इन आत्मकथाओं में दलित साहित्य की अस्मिता स्पष्ट होती है। दलित साहित्य का सही और प्रमाणिक खजाना दलित आत्मकथाएँ हैं। जिसमें दलित लेखकों की वास्तविक तस्वीर अवलोकित होती है। जिसे नकारा नहीं जा सकता। दलित साहित्य की अपनी अलग अस्मिता है। दुःख, दर्द, अपमान, भूख के साथ-साथ छुआ-छूत जैसे प्रताड़ना से प्रताड़ित होने की अनुभूति समाहित है। दलित साहित्यकारों, चिंतकों का मानना है कि यह जाति बोधक अपमान मुझे विरासत में अपने पूर्वजों के द्वारा मिला है। दलित साहित्य समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व का भाव स्थापित करना चाहता है।